Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

# आलोचक आचार्य नंददुलारे वाजपेयी

डॉ.रविकुमार आर.डेकाणी

असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी)

धर्मेंद्रसिंहजी आर्ट्स कॉलेज ,राजकोट

आलोचक उस सेतु के समान होता है जो पथिक को सही स्थान पर पहुँचने में सहायक होता है।आलेचक पाठक और सर्जक के बीच सेतु धर्म निभाते हुए सामान्य पाठक का पथ प्रदार्शन करता है।आलोचक सामन्य पाठक की अपेक्षा बद्धिजीवि होता है , आम पाठक की अपेक्ष किसी कृति के तलस्पर्शी अध्ययन कर उसके गुण-दोष को उद्घाटित करन उसका धर्म है।सामान्यतः आलोचना का अर्थ लोग दोषदर्शन से ही लेते है , आलोचन के व्युत्पत्तिपरक अर्थ पर विचार करने से यह ज्ञात होता ही की आलोचना का अभिप्राय गुण - दोष दोनों से है।आलोचना को समालोचना और समिक्षा भी कहा जाता है।

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी सौष्ठववादी या स्वच्छन्दतावादी आलोचक के रूप में हिंदी साहित्य जगत में ख्यातनाम आलोचक है।सन **1906** में उन्नाव की धरती पर जन्मे वाजपेयी जी छायावाद के प्रबल पक्षधर रहे है।जब छायावादी कवि आलोचकों के विरोध के कारण कुंठित हो रहे थे ,ऐसे में छायावादी कवियों को एक समर्थ आलोचक मिला और छायावादी कवियों और कविता के साथ न्याय किया।वाजपेयी जी ने एक जागरूक चितक के रूप में कृतिओं की आलोचन की है।शिवकुमार मिश्र लिखते है - "आचार्य वाजपेय का समूचा समीक्ष कर्म एक जागरूक चिंतक की मेघावी प्रतिभा तथा प्रगति चिंता का प्रतिफल है।उनके चिंतन की मूलवर्ती जमीन बृहत सामाजिक तथा मानवीय सरोकारों की जमीन है और इसी जमीन से उन्होंने साहित्य , कविता या कला की विवेचना की है।" **1**

वाजपेयी जी की प्रसिद्ध आलोचनात्मक कृति है-

- प्रेमचंद
- जयशंकर प्रसाद
- आधुनिक साहित्य
- नया साहित्य , नये प्रश्न
- महाकवि सूरदास

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

- राष्ट्रभाषा की कुछ समस्या
- महाकवि निराला
- कवि सुमित्रानंदन पंत
- रस सिद्धांत
- साहित्य का आधुनिक युग
- आधुनिक साहित्य जगत और नई समीक्षा

वाजपेयी जी की दृष्टि छायावाद के प्रति सहिष्णु रही है। आचार्य जी ने छायावाद को पश्चिम या बाग्ला का अनुवाद न मानकर उसे रीतिबद्ध और द्विवेदी युगिन साहित्य की प्रतिक्रिया माना है। जिस समय सरस्वती , विशाल भारत , सुधा एवं प्रभा जैसी पत्रिकाएँ छायावाद का विरोध कर रही थी उस समय वाजपेयी जी ने छायावादी कविता की व्याख्या सामाजिक संदर्भो में कर छायावादी कविता की विशेषता का उद्घाटन किया। छयावादी कवि बदरीनाथ भट्ट , बनारसी दास चतुर्वेदी तथा पद्मसिंह शर्मा जैसे आलोचको की आलोचन से कुण्ठित हो रहे थे उस समय वजपेयी जी ने छायावादी कविता की विशेता का उद्घाटन किय ।प्रसाद की कविता में 'मानवीय मूल्य' , 'निराला' की कविता में 'बुद्धि तत्व' तथा पंत की कविता में 'कल्पना तत्व' की प्रधनता को देखा और सिद्ध किया कि छायावादी कविता हिंदी साहित्य की महान उपलब्धि है। मोहन लाल और सुरेशचंद्र गुप्त लिखते है " वायपेयी जी की शक्तिमान आलोचना का यह परिणाम हुआ कि छायावाद की नव - अंकुरित चेतना पनप सकी।" **2**

वाजपेयी जी की आलेचना दृष्टि में विभिन्न सिद्धांत दृष्टिगत होते है -

- रचना में कवि की अंतर् वृतियों क अध्ययन
- रचना में कवि की मौलिकता , शक्तिमता और सृजन की लघुता-विशालता
- रीतियों , शैलियों और रचना के बाह्यांगो का अध्ययन
- समय और समाज तथा उनकी प्रेरणा का अध्ययन ।
- कवि की व्यक्तिगत जीवनी और रचना पर उसके प्रभावका अध्ययन ।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

वाजपेयी जी की समीक्षा पद्धती विवेचनात्मक , व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक रही है।उनकी समीक्षा में गहराई , गंभीरता , संयम और शलीनता है। वह वाद मुक्त आलोचक है।इस संदर्भ में वे लिखते है-

"वाद पद्धति पर चलने का नतीजा साहित्य में कृत्रिमता बढ़ना , दलबंदी फैलाना और साहित्य के निरपेक्ष मप को क्षति पहूँचाना हो सकता है"3

वाजपेयजी के समीक्षा मानकों ने हिंदी आलोचना को नया बल दिया है ।डॉ.देवराज ने उनकी देन को इस प्रकार देखा है -

" नई प्रतिभाओं को अपना सर्मथन एवं प्रोत्साहन दिया , आथुनिक हिंदी पाठकों का रुचि - परिष्कार किया और आलोचना क्षेत्र में प्रसार का मार्ग प्रशस्त किया।4

वाजपेयजी की समीक्षा की प्रमुख विशेषता उनकी समन्वयवादीता है। इन्होंने रसवाद और स्वच्छंदता वाद का समन्वय किया है ।वे आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति को काव्य मानते है।उनकी समीक्षा सौंदर्यबोध से अनुप्रणित है , शास्त्रीय सिद्धांतों से परे सौंदर्यवादी समीक्षा को महत्त्व दिया है।वाजपेय जी काव्य शस्त्राीय सिद्धांतो से उपर उठकर कृति के सौदर्य का उद्घाटन करना ही आलोचक का प्रमुख कार्य मानते है।वाजपेयी जी ने द्विवेदी युग के रचनाकारों से नई कविता तक के रचनाकारों की समीक्षा की है।उन्होंने रचनात्मक साहित्य साहित्य को बल दिया है।वे लिखते है-

"मेरी निष्पति यह है कि रचनात्मक साहित्य ही सिद्धांतों की सृष्टि केलिए उपाादान बन सकता है ।इसके विपरीत कोई सिद्धांत किसी रचनात्मक कलाकृति की ओर उसकी विवेचना को अनुशासित नहीं कर सकता।"5

यह निर्विवादित सत्य है कि आचार्य नंददुलारे वाजपेयी हिंदी साहित्य के एक मूर्धन्य आलोचक है ।आलोचना का क्षेत्र में उनका प्रदान हिंदी साहित्य में अमूल्य है।उन्होंने साहित्य को रस की कसोटी पर नहीं कसा तथापि वे रस के विरोधी नहीं।साहित्य को नीतिवादी आग्रह से मुक्त करके स्वच्छंदता वाद को महत्त्व दिया है।

इस प्रकार वाजपेयी जी स्वच्छंदतावदी , सौष्ठववादी या छायावादी समीक्षक है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

1 आलोचना के प्रतिमान - शिवकुमार मिश्र- पृ-144

2 आलोचना और आलोचक - मोहनलाल , सुरेशचंद्र गुप्त - पृ-82

3 हिंदी साहित्य ः बीसवीं शताब्दी - नंददुलारे वाजपेयी - पृ- 79

4 आधुनिक समीक्षा - पृ-115

5 आलोचक ः आचार्य नंददुलारे वाजपेयी- राममूर्ति त्रिपाठी - पृ - 11